उत्साह

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय
फोटो संग्रह

यह उत्साह
आदरणीय डॉ. शारदा जैन
को समर्पित...
जिनसे हमने सीखा
खुद पीछे रहकर
दूजों को आगे लाना
उत्साह के साथ...

फोटो : दीपिका नैयर, विपिन उपाध्याय, रवि मिश्रा
सहयोग: सुनील लहरी, सलमा शेख, रजनी, कीर्ति
उरमूल सीमांत समिति और संधान द्वारा, प्लान इंडिया के सहयोग से प्रकाशित

उरमूल सीमांत समिति, बज्जू 334305, राजस्थान
टेलिफोन: 01535 232034, urmulssb@gmail.com

उत्साह

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय
फोटो संग्रह

जैतासर, कक्कू, झझ्झू
पूगल, दामोलाई

मन में विश्वास, आंखों में उल्लास

निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 ने 6 से 14 साल तक के सभी बच्चों के लिए शिक्षा को अनिवार्य कर दिया है। समावेशी शिक्षा को लेकर शुरु हुए सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ए), जिला प्राथमिक शिक्षा परियोजना (डी.पी.ई.पी), मिड–डे–मील योजना, शिक्षक – शिक्षा योजना और कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय जैसे नवाचारों ने तेजी पकड़ी।

शिक्षा के अधिकार के अंतर्गत शिक्षा अब सिर्फ किताबी नहीं रह गई। उसमें संगीत, कला, खेल, भाषा और कौशल सभी का मेल हो गया। शिक्षा के अधिकार में सभी बच्चों को शामिल करने पर जोर दिया गया। शिक्षा से वंचित बालिकाओं, असुविधाग्रस्त और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों, घुमंतू और आदिवासी वर्ग के बच्चों की शिक्षा पर भी विशेष ध्यान दिए जाने पर जोर दिया जाने लगा। प्राथमिक स्तर पर लड़कियों की शिक्षा के राष्ट्रीय कार्यक्रम (एन.पी.जी.ई.एल) और कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (के.जी.बी.वी) से बालिका शिक्षा को बढ़ावा मिला।

बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान में 200 कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों का संचालन 186 विकास खण्ड में किया जा रहा है। बीकानेर जिले में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय जैतासर–श्रीडूंगरगढ़, कक्कू–नोखा, झझ्झू–कोलायत, पूगल–बीकानेर और दामोलाई–लूणकरणसर में चल रहे हैं। इन विद्यालयों में कक्षा छह से आठ तक की शिक्षा के साथ जीवन कौशल का शिक्षण भी दिया जा रहा है। बालिकाओं को बेसिक कंप्यूटर, ब्यूटी पार्लर एवम् सिलाई जैसे हुनर भी सिखाये जा रहे हैं। गौरतलब है कि इन विद्यालयों में दाखिला पाने वाली कई बालिकाओं ने पहले किसी भी तरह की औपचारिक या अनौपचारिक शिक्षा नहीं पाई होती है। कुछ बालिकाएं तो ऐसी भी होती हैं जिन्हें पढ़ाई छोड़े 3–4 वर्ष हो गए होते हैं। निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार के तहत आयु अनुरुप विशेष शिक्षण व्यवस्था कर उन्हें नियमित शिक्षा प्राप्त कर रहीं अन्य बालिकाओं के समकक्ष लाया जाता है। वास्तव में यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

राजस्थान में कस्तूरबा गांधी विद्यालयों में गुणवत्ता लाने के लिए सर्व शिक्षा अभियान ने शिक्षा में विशेषज्ञता प्राप्त संस्थाओं का सहयोग लेना आरम्भ किया है। बीकानेर जिले की पांचों कस्तूरबा गांधी विद्यालयों में उरमूल सीमांत, बज्जू और संधान, जयपुर मिलकर गुणवत्ता के लिए काम कर रहे हैं। इसके लिए प्लान इंडिया, वित्तीय सहयोग प्रदान कर रहा है। उरमूल ने अपने बालिका शिविरों से यह तो अच्छे से स्थापित कर दिया है कि शिक्षण को आनंददायी बना कर सीखने की गति को तेज किया जा सकता है। बरसों की इसी आनंददायी शिक्षण की सीख का प्रयोग कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में भी किया जा रहा है।

बालिकाएं खेलती हैं, कूदती हैं, नाचती हैं, गाती हैं, रंगों से खेलती हैं, रंगों से रचती हैं, हर पल कुछ न कुछ रचती, गढ़ती और सीखती–सिखाती रहती हैं। कठिन से कठिन पाठ सहज ही खेल–खेल में समझ जाती हैं। उनका मन अनंत आकाश में उड़ जाता है, पतंगों–सा, ऊंचाईयों को पाने। उनकी आंखों में विश्वास चमकता है, अपने सीखने से उपजा। इसी विश्वास की कुछ तस्वीरों को संयोजित कर यह किताब 'उत्साह' आप सबके लिए प्रस्तुत है। उत्साह का हर चित्र, हर चेहरा एक कहानी कहता नजर आएगा। हर आंख दृढ़ आत्मविश्वास और उत्साह व्यक्त करती है। यह सब शिक्षा के आनंद और उल्लास का ही तो परिणाम है।

हमसे ही सब कहते हैं

कोई नहीं सूर्य से कहता, धूप यहाँ पर मत फैलाओ
कोई नहीं चाँद से कहता, उठा चाँदनी को ले जाओ
कोई नहीं हवा से कहता, खबरदार जो अंदर आई
बादल से कहता कब कोई, क्यों जलधार यहाँ बरसाई

फिर क्यों भैया कहते हमसे, यहाँ न आओ, भाग जाओ
अम्मा कहती हैं घर-भर में, खेल-खिलौने मत फैलाओ
पापा कहते बाहर खेलो, खबरदार जो अंदर आए
हम पर ही सबका बस चलता, जो चाहे वह डाँट लगाए

फिर भी क्यों करते हो भेद, जब लड़का-लड़की एक समान
हम सबको अब पढ़ना है, सबको आगे बढ़ना है

निरमा बिश्नोई की पसंदीदा कविता
कक्षा-8, के.जी.बी.वी., झझ्झू

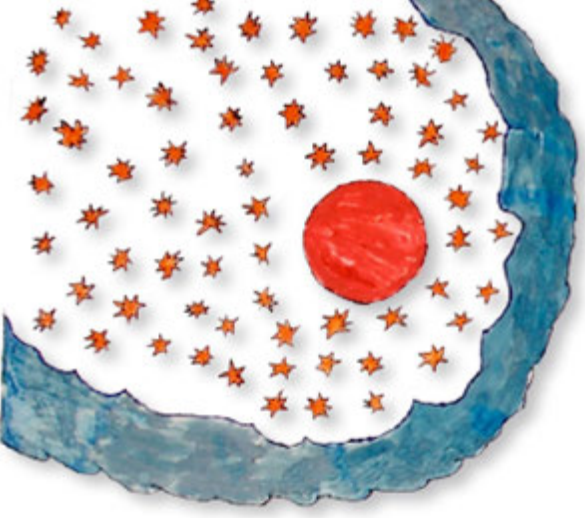

कक्षा 2 में पढ़ाई छूटने के बाद लगा - ''अब कभी नहीं पढ़ पाऊँगी।'' पापा गाँव-गाँव घूम कर गुब्बारे बेचने का काम करते हैं। कभी-कभी मुझे भी इसलिए साथ ले जाते कि गुब्बारे बाँधने व फुलाने में उनको मदद मिलेगी। मैं पढ़ना तो चाहती थी लेकिन पापा के साथ जाना इसलिए अच्छा लगता था कि अलग-अलग गाँव में घूमने का मौका मिलता था।

एक दिन घर लौटते समय मनु बुआ (के.जी.बी.वी. की रसोईया) हमें रास्ते में मिली। उन्होंने पापा को के.जी.बी.वी. स्कूल के बारे में बताया और कहा ''तुम सारे दिन अपने साथ-साथ बेटी को भी घुमाते रहते हो। इसकी तो अभी पढ़ने की उम्र है।'' उन्होंने कस्तूरबा में पढ़ने वाली लड़कियों के बारे में पापा को बताया।

पापा एक दिन के.जी.बी.वी में गये। घर आकर बोले- '' कल तू मेरे साथ के.जी.बी.वी. स्कूल में चलेगी।'' मैं यह सुन कर खुश हो गयी। चिन्ता भी हुई कि घूमने का मौका नहीं मिलेगा। आज यहाँ चार महीने हो गये हैं। कई लड़कियों से दोस्ती हो गई है। अब घर जाना अच्छा नहीं लगता है। अब तो बस पढ़-लिख कर डाक्टर बनने का सपना है। यह के.जी.बी.वी. और मनु बुआ नहीं होती तो पता नहीं ''मैं कहां-कहां घूमती फिरती इन गुब्बारों को फुलाती।''

पायल, कक्षा-6, नैतासर

सर्व शिक्षा अभियान
कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय
M.C.S. कक्कू त.नोखा (बीकानेर) N.P.E.G.EL
स्वागतम्

DULCET

यह वीणा का सपना है

मम्मी मन करता है मेरा, रोज बाग में जांऊ
बाग बगीचों में खेलूं मैं, जी भर मौज मनाऊं

मम्मी मन करता है मेरा, तितली सी उड़ जाऊं
पंछी सी उपवन में डोलूं, मीठे गीत सुनाऊं

मम्मी मन करता है मेरा, सागर सी लहराऊं
बर्फीले पर्वत पर घूमूं, जंगल में खो जाऊं

मम्मी मन करता है मेरा, नानी के घर जाऊं
पीपल की छाया के नीचे, मीठे जामुन खाऊं

वीणा सिद्ध की पसंदीदा कविता
कक्षा-7, के.जी.बी.वी., जैतासर

K.G.A.B
KAK

454

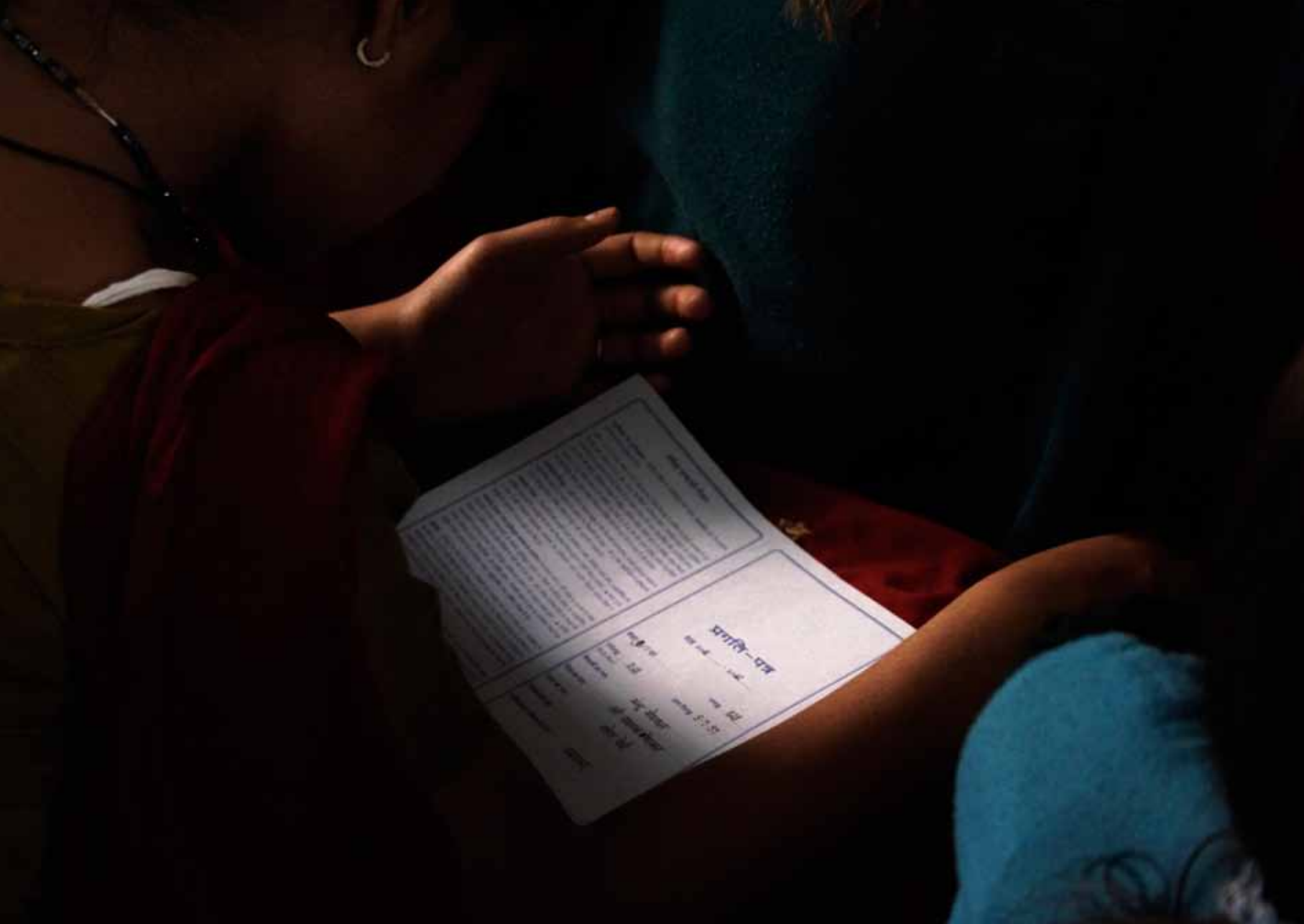

प्राथमिक स्वास्थ्यकेंद्र
दामोलाई
प्रसव-कक्ष
बीकानेर (NRHM)
पुरुष नसबन्दी

2

सीखते हैं ? उनके मस्तिष्क का
क्या-क्या चाहिए ?
मुझको चाहिए।
समझेंगे जो,
निकालेंगे जो।

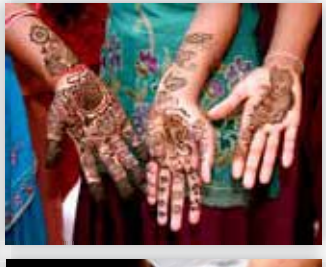

चित्रांकन एक चिड़िया का

पहले चित्रित करो
एक पिंजरा
जिसमें बना हो एक खुला दरवाजा।
फिर उकेरो
कुछ सुंदर,
कुछ सहज,
कुछ नयन-रस-रंजक
कुछ उपयोगी
चिड़िया के हित में
फिर,
टिका दो कैनवास, एक वृक्ष के सहारे।
एक वाटिका में,
एक उपवन में,
या कि एक वन में
छिप जाओ एक वृक्ष के पीछे
हो रहो निश्चल.....

कभी-कभी
आती है चिड़िया तेजी से,
लेकिन उसी तरह
वह व्यतीत कर सकती है कई वर्ष,
हतोत्साहित न होना,
कोई निर्णय लेने से पहले
करना प्रतीक्षा,
प्रतीक्षा, वर्षों तक,
यदि आवश्यक हो
आने में,
तेजी, या
धीमापन,
चिड़िया का
चित्र की सफलता से असंबद्ध।

जब चिड़िया आती है,
यदि,
वह आए
ध्यान देना सर्वाधिक
परम मौन पर।
करना प्रतीक्षा,
जब तक चिड़िया पिंजरे में न चली जाए।
और,
जब वह भीतर पहुंच जाए,
कोमलतापूर्वक बंद कर देना द्वार,
एक ब्रश की सहायता से।
तब-
चित्रित करना,
पिंजरे की सभी छड़ें,
एक के बाद एक।
ध्यान रहे
चिड़िया का एक पंख मत छूने पाए।
फिर बनाना वृक्ष का पोर्ट्रेट-चुनकर,
उसकी सुंदरतम शाखाएं,
चिड़िया के लिए।
करना चित्रित हरियाली और हवा की ताजगी,
धूप और भीषण गर्मियों की तपन में
कीड़े-मकोड़ों का शोर।

फिर,
प्रतीक्षा करना,
कि चिड़िया गाने का फैसला करे।
यदि चिड़िया नहीं गाती,
तो बुरा लक्षण है।
एक संकेत कि,
तुम्हारा चित्रण भद्दा है।
किंतु, यदि वह गा दे तो शुभ संकेत है
एक संकेत कि, तुम गा सकते हो।
तो अब अत्यंत कोमलतापूर्वक चिड़िया का
एक पंख बाहर खींचना
और लिख देना अपना नाम चित्र के
एक कोने पर

फ्रांसी लेखक ज्याक प्रिवर की कविता
का प्रमोद पांडेय द्वारा अनुवाद, जैन भारती से साभार

बालिका मिलन
कस्तूरबा गांधी
बालिका विद्यालयों की
और 13 जून 2012

बालिका मिलन समारोह

फूल बनाओ
रिंग का किंग

न्याय

एक पढ़ाए एक को
शिक्षा मिले अनेकों

जहां पर द्वैत और अद्वैत का निर्णय नहीं होता, उस संबंध को 'समवाय' कहते हैं। जिस शिक्षा पद्धति में ज्ञान और कर्म का समवाय होगा और हम बता नहीं सकेंगे कि इस समय ज्ञान चल रहा है या कर्म- वही हमारी पद्धति होगी। ज्ञान और कर्म में फर्क नहीं किया जाएगा। ज्ञान की प्रक्रिया चलती है, तो कर्म की प्रक्रिया भी चलेगी और कर्म की प्रक्रिया चलती है, तो ज्ञान की प्रक्रिया भी चलेगी। कर्म और ज्ञान एक-दूसरे से इतने ओतप्रोत होंगे कि किसी भी तरह का जोड़ बैठाने का काम नहीं किया जाएगा। बाहर से ज्ञान लेने की बात नहीं रहेगी। कर्म के जरिए ही ज्ञान का विकास किया जाएगा और ज्ञान के जरिए ही कर्म का। यही हमारी पद्धति है।

आचार्य विनोबा भावे